कक्षा 12 राजनीति विज्ञान

ANSWER SET–7

✦ खंड – क : बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) सोवियत संघ का आर्थिक संकट
2. (ग) स्वतंत्र विदेश नीति
3. (क) एशिया-अफ्रीका देशों की एकता स्थापित हुई
4. (ग) त्वरित कूटनीतिक संपर्क
5. (ख) आपातकालीन प्रावधान
6. (ग) अधिक केंद्रीकृत हो जाते हैं
7. (ख) स्थानीय स्वशासन का संवैधानीकरण
8. (ख) प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद में
9. (ग) आंतरिक लोकतंत्र में कमी
10. (ग) केंद्र-राज्य संबंधों पर
11. (ख) संघीय लोकतंत्र की मजबूती
12. (ख) प्रतिनिधित्व की कमी
13. (ख) स्वतंत्र निर्णय क्षमता
14. (ग) परामर्शात्मक
15. (ग) स्वतंत्रता और निष्पक्षता
16. (ख) नागरिक अनुशासन विकसित करना
17. (ख) आयरिश संविधान
18. (ख) अंतरराष्ट्रीय चर्चा का मंच प्रदान करना
19. (ग) जनभागीदारी से
20. (ख) अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रियता

✦ खंड – ख : अति लघु उत्तरीय प्रश्न

21. शीत युद्ध का एक प्रमुख परिणाम

विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया।

22. बांडुंग सम्मेलन का एक उद्देश्य

उपनिवेशवाद का विरोध।

23. आपातकालीन प्रावधानों का एक प्रभाव

केंद्र की शक्तियों में वृद्धि।

24. विकेंद्रीकरण का अर्थ

शक्तियों का निचले स्तर की सरकारों को हस्तांतरण।

25. संसदीय प्रणाली की एक विशेषता

कार्यपालिका संसद के प्रति उत्तरदायी होती है।

26. दल-बदल कानून का एक उद्देश्य

राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना।

27. क्षेत्रीय दलों का एक राष्ट्रीय प्रभाव

केंद्र-राज्य संबंधों को प्रभावित करना।

28. मौलिक कर्तव्य का एक उदाहरण

राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना।

29. UNSC के सुधार क्यों आवश्यक हैं?

प्रतिनिधित्व और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए।

30. रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ

विदेश नीति में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता।

✦ खंड – ग : लघु उत्तरीय प्रश्न (I)

31. शीत युद्ध के दौरान कूटनीति की भूमिका

कूटनीति के माध्यम से महाशक्तियों ने प्रत्यक्ष युद्ध से बचाव किया। हॉटलाइन और शस्त्र नियंत्रण समझौते हुए।

32. गुटनिरपेक्ष आंदोलन की बदलती भूमिका

शीत युद्ध में तटस्थता पर जोर था, आज विकास और बहुपक्षीय सहयोग पर ध्यान है।

33. भारतीय संघवाद में आपातकालीन प्रावधानों का महत्व

राष्ट्रीय एकता बनाए रखने और संकट से निपटने के लिए।

34. गठबंधन सरकारों में नीति निर्माण की कठिनाइयाँ

दलों के बीच मतभेद और स्थिरता की कमी।

35. क्षेत्रीय दलों और राष्ट्रीय एकता का संबंध

क्षेत्रीय दल स्थानीय मुद्दों को उठाते हैं, जिससे संघीय ढांचा मजबूत होता है।

36. संयुक्त राष्ट्र महासभा की सीमाएँ

इसके प्रस्ताव बाध्यकारी नहीं होते।

✦ खंड – घ : लघु उत्तरीय प्रश्न (II)

37. शीत युद्ध के अंत के अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव

विश्व एकध्रुवीय बना, वैश्वीकरण बढ़ा और नई शक्ति संरचनाएँ उभरीं।

38. भारतीय संघवाद में केंद्रीकरण की प्रवृत्तियाँ

अवशिष्ट शक्तियाँ केंद्र के पास, आपातकालीन प्रावधान और राज्यपाल की नियुक्ति।

39. गठबंधन राजनीति का भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव

समावेशिता बढ़ी, परंतु अस्थिरता भी देखी गई।

40. संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता

विश्व शांति, मानवाधिकार और विकास में भूमिका, परंतु सुधार आवश्यक।

✦ खंड – ङ : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

41. गुटनिरपेक्ष आंदोलन की उत्पत्ति, उद्देश्य और समकालीन चुनौतियाँ

गुटनिरपेक्ष आंदोलन शीत युद्ध के दौरान नवस्वतंत्र देशों द्वारा शुरू किया गया। इसका उद्देश्य स्वतंत्र विदेश नीति, उपनिवेशवाद का विरोध और विश्व शांति था।

आज इसकी चुनौतियाँ हैं—सदस्य देशों के मतभेद, बदलती वैश्विक राजनीति और आर्थिक निर्भरता। फिर भी विकासशील देशों के लिए यह महत्वपूर्ण मंच है।

42. भारत की विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीयता

रणनीतिक स्वायत्तता भारत को स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता देती है। बहुपक्षीयता के तहत भारत विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय है।

यह नीति भारत को वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करती है और संतुलित कूटनीति को बढ़ावा देती है।